श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष- अभ्यास - ८

जनवरी - २०२३

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. शरीर का ममता का त्याग कर ..... में रमणता करनी है ।
२. उच्चस्वर में किसी का झुठा मर्म उजागर करना वह ..... नामक अतिचार है ।
३. मृत्यु के पश्चात दूसरी जगह जन्म लेने जाते वक्त जहाँ से मोड मुडना हो उस स्थान से दूसरी श्रेणी उपर चढने में ..... सहायता करता है ।
४. इस आत्मा के अलावा ..... वगैरह अलग कुछ भी नहीं ।
५. वर्तमान काल में सीमंधर स्वामी ..... विजय में विचर रहे हैं ।
६. ..... आभुषणों की रचना से देवीओ के शरीर के अवयव सुशोभित हैं ।
७. बलवान मनुष्य क्षोभ पा जाये पर स्वयं दूसरों से क्षोभ न पाये वह ..... है ।
८. कोई भी कषाय एक साल टिक जाये तो ..... बनता है ।
९. शरीर में रोग अथवा शरीर श्रमीत न हो तो भी धर्मध्यान शुभ कृत्य न करते निरर्थक पूर्ण रात्रि सोकर रहना ..... कहलाता है ।
१०. ..... ही न होने के कारण एकेन्द्रिय असंघयणी होते हैं ।
११. आभियोगिक देवो ..... जाति के देव हैं ।
१२. अचलभ्राता गणधर ने अपना परिवार ..... को सौंप दिया था ।
१३. साधक के जीवन के व्रत नियम में लगे हुए अतिचार ..... आवश्यक से शुद्ध होते हैं ।
१४. ..... नामकर्म के उदय से रुई को हल्का शरीर मिला है ।
१५. सूरप्रभ और विद्यतप्रभ द्रह ..... क्षेत्र में आये हैं ।
१६. मैं ..... करके उसका पश्चाताप नहीं करुंगा ।
१७. नंदादेवी ने अचलभ्राता को ..... नक्षत्र में जन्म दिया था ।
१८. त्रस जीवों की चाल में फरक ..... नाम कर्म के कारण होता है ।
१९. उखल मूसल निसाद, लोहा वगैरह ..... कहलाते हैं ।
२०. नीलवंत के उपर केसरी द्रह में ..... का निवास स्थान है ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. जीवन को शुद्ध सात्विक बनाने के लिये क्या करना चाहिये ?
२. प्रभु के पास से त्रिपदी पाकर गणधर भगवन्तो ने किसके द्वारा द्वादशांगी की रचना की ?
३. जेलर किसे प्रतिक्रमण करनें में सहायक बना ?
४. देवो में उत्तम प्रकार की प्रीति उत्पन्न करने में कौन कुशल हैं ?
५. चक्रवर्ती को जीतने योग्य क्षेत्र को क्या कहते हैं ?
६. किस गुण के कारण हम अपने अधिकरण दूसरों को देते हैं ?
७. वर्तमान काल में हमें कौनसा संघयण मिला है ?
८. प्रत्याख्यानावरणीय कषाय किसका घात करते हैं ?
९. अचलभ्राता गणधर के पिता का गौत्र क्या था ?
१०. द्वादशांगी का बारमा अंग क्या है, जिसमें चौद पूर्व समाये हैं ?
११. पश्चिम महाविदेह के उत्तर में कौन सी विजय में तीर्थंकर विचर रहे हैं ?
१२. नाभि के उपर के अवयव हिनादिक हो जबकि नाभि से नीचे के अवयव संपूर्ण और सुंदर हो ऐसी शरीराकृति को क्या कहते हैं ?
१३. मोह से, प्रमाद से या अज्ञान से हम स्व में से पर में चले जायें उसे क्या कहते है ?
१४. दुर्ध्यान का आचरण किया हो उसे क्या कहते हैं ?
१५. आनुपुर्वी का उदय कहाँ होता है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) खुज्जाई २) क्रमेशं ३) लद्धि ४) सीअं ५) उड्डण ६) तंति ७) सिणिद्ध ८) नियाउ ९) अेसहं १०) मुरांलगे
११) पुणो पुणो १२) कंदर्प १३) राइ १४) वक्के १५) तितं १६) पगारअेहिं १७) इत्थं १८) किण्ह १९) दुरहि २०) गीअ

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) अप्रत्याख्यानवरणीय	१) पराघात	६) शंख	६) वीणा
२) वंदन	२) लोकपाल	७) मर्कटबंध	७) वसुदेव
३) तेजस्विता	३) नाराच	८) नंदा	८) नम्रता
४) त्रिपुष्कर	४) मरकत मणि	९) पोपट	९) देशविरती
५) वरुण	५) जोत्र	१०) पराणो	१०) पद्म

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. अभ्यास में दिये गये ऐसे कृत्य कितने हैं जो प्रमाद के वश आचरित होते है ?
२. धीदेवी का स्थान है उस सरोवर की चौडाई कितने योजन है ?
३. चोविसत्थो आवश्यक में कितने तीर्थंकर की भक्ति का लाभ मिलता है ?
४. वर्ण चतुष्क में शुभाशुभ भेद कितने ?
५. भरत और ऐरावत क्षेत्र कितने योजन विस्तार वाला है ?
६. अचलभ्राता गणधर ने कितने वर्ष चारित्र धर्म पाला ?
७. जंबुद्वीप में सरोवरों की संख्या कितनी ?
८. गर्भज, तिर्यंच और मनुष्य को कितने संघयण होते हैं ?
९. आभियोगिक देव की श्रेणियाँ कितनी ?
१०. अचलभ्राता गणधर कितने वर्ष गृहस्थाश्रम में रहे ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. प्रत्याख्यानावरणीय कषाय यथाख्यात चारित्र का घात करता है ।
२. पराइ पंचायत करना यह मौखर्य नामा अतिचार है ।
३. मेरु पर्वत के उत्तर तरफ के एक वैताढ्य पर्वत पर सौधर्मेंद्र के लोकपाल के आभियोगिक देवों के रहने के स्थान हैं ।
४. गणधर भ. दीक्षा के समय प्रभु से तीनबार तत्व की पृच्छा करते हैं ।
५. त्रस जीवों की चाल में जो फर्क होता है वह विहायो गति नाम कर्म के कारण होता है ।
६. अचलभ्राता को नरक के बारे में शंका थी ।
७. प्रयोजन बिना की प्रवृति से बंधाते कर्म और भोगने पडते कटु विपाक वह अनर्थ दंड है ।
८. एक मात्र कील जैसी हड्डी से ही दो हड्डियाँ जुडी हो ऐसी हड्डी की रचना अर्ध नाराच संघयण है ।
९. जिन शासन को पाये हुए साधु-साध्वी, श्रावक श्राविका को प्रतिक्रमण अवश्य करने के कर्तव्यरुप बताया है ।
१०. देदिप्यमान आभुषणों से विभुषित देवांगनाओ ने भक्ति से श्री शांतिनाथ भ. के चरणों में बारंबार वंदना की है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. पंचम आरे के वर्तमान काल के मनुष्य को भी छेवट्ठा संघयण होता है ।
२. इस जगत में बहुत सी आत्मायें बहुत तरह से दुखी दिखती हैं ।
३. मैं जहाँ तक हो सके कर्कश-क्लेशयुक्त वचन बोलुंगा नहीं ।
४. अपनी भूलों का स्वीकार कर अपने जीवन में से सदा के लिये विदाई देनी पडती है ।
५. हिमवंत-हिरण्यवंत आदि क्षेत्र हैं, परंतु वहाँ चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव आदि की कोई व्यवस्था नहीं ।
६. जिस नाम कर्म के उदय से शरीर भस्म की भांति रक्ष होता है वह रुक्ष स्पर्श नामकर्म है ।
७. अगर जीवन में सर्वविरती टिकानी हो तो पाक्षिक प्रतिक्रमण अवश्य करना चाहिये ।
८. त्रिलोकनाथ का शासन कहता है कि बसना तो "स्व" में ही है ।
९. प्राणीओ के शरीर में पाँच प्रकार के रस होते हैं ।
१०. वह खेत निरर्थक पडा है, इसमें हल चलवाकर पानी की नाली जोड दो ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. प्रतिक्रमण आवश्यक । २) संघयण नाम कर्म के साथ दो संघयण ।
३) अचलभ्राता गणधर की शंका और प्रभु का समाधान ।
४) अनर्थ दंड किसे कहते हैं, उसके कितने प्रकार है, दुर्ध्यान (अपध्यान) के द्वारा हम अपनी आत्मा को किस तरह दंडित करते हैं ?
५) शांतिनाथ भ. के चरणों में वंदन के लिये आई देवांगनायें कौन कौन सी कला में निपुण हैं, समझाओ ।

उत्तर पत्र लिखे पते पर भेजिए : सौ. काश्मीरा विनोद लोडाया
शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबद (महा.) ४३१ ००१
सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.achalgach.com